CAMBRIDGE
International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **February/March 2024**

TRANSCRIPT **Approximately 45 minutes**

This document has **8** pages.

© Cambridge University Press & Assessment 2024

Cambridge Assessment International Education
Cambridge IGCSE
March 2024 Examination in Hindi as a Second Language
Paper 2 Listening Comprehension

Turn over now

[Pause 5 seconds]

FEMALE: अभ्यास 1: प्रश्न 1–6

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: संवाद 1

FEMALE: * छात्रो, आज हम विश्व प्रसिद्ध जासूसी संग्रहालय देखने जा रहे हैं। वहाँ आपको प्रसिद्ध जासूसों द्वारा इस्तेमाल की गई लिपस्टिक पिस्तौल, ख़ुफ़िया कैमरे, माइक्रोफ़ोन वाले जूते और चमत्कारी गाड़ी जैसी चीज़ें देखने को मिलेंगी। आपको जेम्स बॉन्ड और माता हारी जैसे लोकप्रिय जासूसों के कारनामों की प्रदर्शनी देखने के अलावा जासूसी के खेलों में भाग लेकर जासूसी करने का मौक़ा भी मिलेगा। जासूसी की दुनिया का मज़ा लें और शाम को पाँच बजे तक यहीं लौट आएँ। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 2

FEMALE: * महिलाः नमस्ते। मुझे एक शिलालेख की प्रति चाहिए।

पुरुषः शिलालेखों की प्रतियाँ तो पांडुलिपि विभाग में हैं।

महिलाः वह किधर है?

पुरुषः आप वहाँ नहीं जा सकतीं। संदर्भ डेस्क पर जाकर पुस्तक सूची से पांडुलिपि संख्या नोट कर लाइए। प्रतिलिपि हम बना कर देंगे।

महिलाः ठीक है।

पुरुष: क्या आपके पास पुस्तकालय की सदस्यता है?

महिलाः ओह! माफ़ करें, यह रहा कार्ड। **

[Pause 10 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2024

MALE: **संवाद 3**

FEMALE: * हैलो आशीष! अगले हफ़्ते हमारे कॉलेज का सांस्कृतिक महोत्सव है। इस बार हमने ग्रेटा थुनबर्ग को मुख्य अतिथि बना कर बुलाया है। जलवायु परिवर्तन की समस्या दिनों-दिन गंभीर होती जा रही है। पर पर्यावरण की बात दूसरी बड़ी ख़बरों के शोर में दबती जा रही है। अरे, यह बताना तो भूल ही गई कि कार्यक्रम पेश करने का ज़िम्मा भी मुझे ही मिला है। इसलिए कोई बहाना नहीं! तुम्हें ज़रूर आना है। सुनते ही फ़ोन करना। बाय। **

[Pause 10 seconds]

MALE: **संवाद 4**

FEMALE: * महिलाः भाई साहब, इस शॉपिंग मॉल में कोई डाकखाना भी है क्या?

पुरुषः नहीं, डाकखाना तो मैंने नहीं देखा। आपको करना क्या है?

महिलाः किसी के पास कुछ भेजना था।

पुरुषः तो आप कुरियर से क्यों नहीं भेज देतीं?

महिलाः पता नहीं! मुझे उन पर भरोसा नहीं होता।

पुरुषः तब तो आपको स्टेशन जाना पड़ेगा।

महिलाः क्यों? यहाँ के लोग डाक नहीं भेजते?

पुरुषः जी, बस ऐसा ही है। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **संवाद 5**

MALE: * भारत लुम्बिनी में बौद्ध संस्कृति और विरासत के अंतर्राष्ट्रीय केंद्र का निर्माण कर रहा है। केंद्र के लिए ज़मीन लुम्बिनी विकास ट्रस्ट से मिल रही है और इसके निर्माण की पहल दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ ने की है। महायान और वज्रयान के भिक्षुओं के मंत्रोच्चार के बीच हुए शिलान्यास के बीच भारत और नेपाल के नेताओं ने केंद्र की रूपरेखा का अनावरण किया। इसका भवन कमल के पुष्प की आकृति का होगा और इसकी ऊर्जा खपत से पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं होगा। **

[Pause 10 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2024

FEMALE: संवाद 6

MALE: * पुरुषः पारुल, गर्मी की छुट्टियों में मुझे घर जाना है।

महिलाः तो जाओ! मैं क्या करूँ?

पुरुषः तुम यह करो कि मुझे कोई अच्छी सी किताब बताओ जिसके सहारे रास्ता आसानी से कट सके!

महिलाः ठीक है। केतन जगत का एक नया उपन्यास आया है। उसे ले जाओ।

पुरुषः नहीं पारुल! केतन जगत के कथानक वही घिसे-पिटे होते हैं।

महिलाः तो फिर कोई ऐतिहासिक उपन्यास ले जाओ।

पुरुषः इतिहास के लिए परीक्षा क्या कम थी? अब उपन्यास भी पढ़ो!

महिलाः तो फिर क्या पढ़ोगे? कोई कविता या ग़ज़ल संग्रह ले जाओ! **

[Pause 10 seconds]

MALE: यह अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2: प्रश्न 7

MALE: तुर्की के दर्शनीय प्रदेश कैपाडोसिया के आकर्षणों का परिचय देने वाली इस वार्ता को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a–h) को भरिए।

यह वार्ता आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * मध्य तुर्की में करोड़ों साल पुराने ज्वालामुखियों के लावे की परतों से बना एक पठारी प्रदेश है। इसे प्राचीन युग में कैपाडोसिया के नाम से जाना जाता था। लावे से निकले खनिजों के क्षार, पानी के कटाव और हवा के बहाव ने बलुआ चट्टानों की नरम परतों को तराशा है। जिससे ऐसी चमत्कारिक आकृतियाँ बन गई हैं मानो किसी ने मीनारों, गुम्बदों और गुफाओं के शहर के शहर बसा दिए हों। कैपाडोसिया की मीनारें लोगों को रहस्यमयी लगी होंगी इसलिए इनका नाम परी मीनार पड़ गया। यहाँ के शहरों के नाम भी रहस्यमय लगते हैं, जैसे केसरी, अकसराय और नीड।

प्रकृति की बनाई संरचनाओं को देखकर लोगों ने भी चट्टानों को तराशना और भूमिगत गिरजे, दरगाह और घर बनाना शुरू किया जिसकी वजह से यहाँ विभिन्न सभ्यताओं और साम्राज्यों के अवशेष मिलते हैं। यूरोप और एशिया की सीमा पर पड़ने के कारण यहाँ सुरक्षा एक चुनौती थी। इसलिए लोगों ने चट्टानों को काट कर भूमिगत शहर भी बसाए।

शायद लोगों को यह जानकारी भी थी कि वे भूमि के नीचे सात परतों तक जा सकते हैं। इसलिए सात मंज़िलों तक गहरे बहुमंज़िला मकान बनाए गए हैं। भूमिगत शहरों में ज़रूरत की सारी चीज़ों का प्रबंध होता था, जैसे कुएँ, रसोईघर, पूजा स्थल, शौचालय और हवा के आवागमन के रास्ते। ताकि बाहर से किसी चीज़ की ज़रूरत के बिना लंबे समय तक रहा जा सके।

© Cambridge University Press & Assessment 2024

कैपाडोसिया के सबसे बड़े शहर केसरी के पास हुई खुदाई से मिले व्यावसायिक शिलालेख से पता चलता है कि असीरियाई लोगों ने यहाँ ईसा से चौर हज़ार वर्ष पहले एक व्यापार संगठन शुरू किया था जिसके ज़रिए सोने, चाँदी और ताँबे का व्यापार होता था।

रोमन साम्राज्य के ज़माने में ईसाई प्रचारकों ने यहीं आकर शरण ली थी। चट्टान काट कर बनाए गए उनके गिरजाघरों के अवशेष आज भी मौजूद हैं। ग्यारहवीं सदी में यहाँ तुर्क आए और उन्होंने मस्जिदें और सरायें बनवाईं। इस पूरे क्षेत्र के विहंगम दृश्य का मज़ा लेने के लिए हवाई गुब्बारों से सैर करना सैलानियों में सबसे लोकप्रिय है। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 2 की यह वार्ता अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3: प्रश्न 8–15

FEMALE: जन-स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ दिव्या समर्थ के साथ पत्रकार दिलीप देव की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: *दिलीपः डॉ दिव्या समर्थ, आरोग्य कार्यक्रम में आपका स्वागत है।

दिव्याः धन्यवाद दिलीप जी।

दिलीपः दिव्या जी, विश्व मोटापा एटलस के अनुसार इस दशक के अंत तक दुनिया के लगभग सौ करोड़ लोग मोटापे का शिकार हो जाएँगे और लगभग 50 लाख लोग मोटापे से होने वाली बीमारियों से मरने लगेंगे। क्या मोटापे की समस्या इतनी भयावह हो गई है?

दिव्याः जी, दिलीप जी। इस दशक के अंत तक दुनिया की हर पाँचवी स्त्री और हर सातवाँ पुरुष मोटापे का शिकार हो जाएँगे। बच्चों में यह बीमारी और भी तेज़ी से फैल रही है इसलिए यह दुनिया के लिए स्वास्थ्य की सबसे बड़ी चुनौती बन चुकी है।

दिलीपः कोई मोटा है या नहीं, इसे तय करने का आधार क्या है?

दिव्याः मोटापे को आपके बॉडी मास सूचकांक से तय किया जाता है। पहले शरीर का वज़न ले लीजिए। उसके बाद अपना क़द नापिए। फिर क़द को दो से गुणा कीजिए और शरीर के वज़न को उससे भाग दे दीजिए। जो भागफल आएगा उसे बॉडी मास सूचकांक कहते हैं। आपका सूचकांक 25 से ज़्यादा हो तो आप मोटे माने जाते हैं और 18.5 से कम हो तो पतले।

दिलीपः मोटापे के मुख्य कारण क्या हैं? क्या यह समस्या कुछ ख़ास लोगों को होती है या फिर किसी का भी वज़न बढ़ सकता है?

दिव्याः वज़न कई कारणों से बढ़ सकता है। पर सबसे प्रमुख कारण है खान-पान के ज़रिए ज़रूरत से अधिक कैलरी या ऊर्जा लेना। हम कितनी ऊर्जा ख़र्च करते हैं, यह हमारे परिश्रम, शरीर के रख-रखाव, पाचनतंत्र की सक्रियता और सामाजिक परिवेश पर निर्भर करता है। आर्थिक और वैज्ञानिक उन्नति के कारण आजकल खान-पान सुलभ हो गया है और मशीनों ने काम-काज को आसान बना दिया है। इसलिए मोटापा फैल रहा है।

दिलीपः पर कुछ लोग ख़ूब और मनचाहा खाने और व्यायाम नहीं करने पर भी मोटे नहीं होते और कुछ लोग सारी सावधानियाँ बरतने पर भी मोटे हो जाते हैं, ऐसा क्यों?

दिव्याः इसकी वजह मानव जीन हैं। अब तक 50 से अधिक ऐसे जीनों की पहचान कर ली गई जो मोटापे का ख़तरा बढ़ाते हैं। इनमें MCNR नाम का जीन भी शामिल है जिसमें होने वाले परिवर्तनों को मोटापे का एक प्रमुख कारण माना जाता है। यह जीन भूख बढ़ाता है। खपत के बजाय ऊर्जा जमा करने की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है और तनाव के क्षणों में खाने की इच्छा बढ़ाता है। जिन लोगों के शरीर में यह जीन होता है और खाने-पीने की सुलभता होती है, वे कोशिशें करने पर भी पतले नहीं रह पाते।

दिलीपः वज़न बढ़ने या मोटा होने के नुक़सान क्या हैं? कई मोटे लोग भी दूसरों से ज़्यादा चुस्त और स्वस्थ होते हैं।

दिव्याः वज़न बढ़ने से मधुमेह, दिल की बीमारी, स्ट्रोक और कैंसर जैसी घातक बीमारियों की संभावना कई गुणा बढ़ जाती है। जोड़ों का दर्द और सुस्ती भी बढ़ती है। पर सबसे चिंता की बात यह है कि इससे आत्मविश्वास कमज़ोर पड़ता है जिससे कई तरह के मनोरोग हो सकते हैं।

दिलीपः दिव्या जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

दिव्याः धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2024

MALE: **अभ्यास 4: प्रश्न 16–23**

FEMALE: **साहित्य और सिनेमा पर दो वक्ताओं की बातचीत को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।**

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * साहित्य अभिव्यक्ति का आदिम माध्यम है, जबकि सिनेमा तकनीक आधारित और नया। साहित्य को सिनेमा की ज़रूरत है या नहीं, कहना मुश्किल है। लेकिन सिनेमा का काम साहित्य के बिना नहीं चल सकता। हिंदी लेखकों में सिनेमा को लेकर कभी सम्मान भाव नहीं रहा। उनके लिए सिनेमा की दुनिया हमेशा बदनाम गली की तरह रही है। वहाँ जाने का अर्थ साहित्य के ऊँचे और पवित्र आसन से नीचे उतरना माना जाता रहा है। साहित्य का उद्देश्य व्यवसाय नहीं है, पर सिनेमा का काम बिना व्यवसाय के चल नहीं सकता। इसलिए यह भी माना जाता है और कुछ हद तक ठीक भी है कि सिनेमा में साहित्य को व्यावसायिक समझौता करना ही पड़ता है।

FEMALE: लेखकों के इस दृष्टिकोण की जड़ें सिनेमा के प्रति हिंदी समाज की मानसिकता में खोजी जा सकती हैं। हिंदी समाज में स्वांग-नौटंकी और नृत्य-संगीत के लिए सम्मान भाव कभी नहीं रहा। ग्लैमर और पैसा जुड़ जाने के कारण सिनेमा के प्रति समाज का रवैया थोड़ा बदला है, लेकिन साहित्यकारों का सिनेमा के प्रति जो रवैया पहले था, उसमें कोई ख़ास फ़र्क नहीं आया है। हर कथाकार यह तो चाहता है कि उसकी कहानी पर फ़िल्म बने, कवि की भी इच्छा रहती है कि उसकी कविता सिनेमा के सहारे जन-जन तक पहुँचे। लेकिन सीधे तौर पर उससे जुड़ने में उसे परहेज़ अब भी है।

MALE: प्रेमचंद, भगवतीचरण वर्मा और अमृतलाल नागर जैसे कथाकार सिनेमा में गए ज़रूर, पर जल्दी ही साहित्य की दुनिया में लौट आए। आज जावेद अख़्तर, गुलज़ार और प्रसून जोशी जैसे गीतकारों को स्टार की हैसियत तो प्राप्त है, लेकिन उनकी जगह साहित्य के ऊँचे और पवित्र आसन पर हरगिज़ नहीं है। इन सबका कारण क्या है? क्या साहित्य और सिनेमा का कोई सहज संवादधर्मी संबंध संभव नहीं? क्या इसमें मुख्य बाधा वह व्यावसायिकता है, जिसके बिना सिनेमा की दुनिया भले कायम न रह सके, साहित्य के लिए उसमें फँसना अपने-आप को नष्ट करना है?

FEMALE: साहित्य और सिनेमा में एक बुनियादी अंतर यह है कि सिनेमा एक सामूहिक काम है। कहानी, संवाद, पटकथा, गीत-संगीत, अभिनय, निर्देशन, छायांकन आदि कला-रूपों के कुशल संयोजन का नाम ही सिनेमा है। इसमें बड़ी टीम, बड़ी पूँजी और नए-नए तकनीकी ज्ञान की ज़रूरत है। एक फ़िल्म के विफल होने का मतलब है बड़ी पूँजी का डूब जाना। साहित्य-सृजन का काम इससे भिन्न है। लेखक में प्रतिभा और जीवन-दृष्टि के साथ मेहनत करने की क्षमता है, तो वह साहित्य-सृजन कर सकता है। कोई साहित्यिक कृति विफल होती है तो एक लेखक विफल होता है।

MALE: हिंदी सिनेमा और साहित्य का संबंध दो तरह से है। कुछ लेखक फ़िल्मों के लिए गीत और कहानी लिखने गए और फ़िल्मकारों की शर्त पर लिखते रहे और वहीं के होकर रह गए। जैसे नरेंद्र शर्मा, शैलेंद्र, साहिर, प्रदीप, राही मासूम रज़ा। सिनेमा में जाकर इनका साहित्य सृजन कितना प्रभावित हुआ, यह तो शोध का विषय है। पर इतना तय है कि इनके स्पर्श से सिनेमा ज़रूर सुंदर हुआ। कुछ लेखकों की कहानी को फ़िल्मकारों ने चुना और लेखक को भागीदार बना कर तीसरी क़सम और देवदास जैसी यादगार फ़िल्में बनाई गईं। पर लेखक ऐसी फ़िल्में नहीं लिख पाए जो यादगार कही जा सकें।

FEMALE: कुँवर नारायण का कहना है कि सिनेमा साहित्य का अनुवाद नहीं होता, पर फ़िल्मांकन के लिए साहित्य कथा का मौलिक स्वरूप ही बदल डाला जाए यह उचित नहीं। साहित्य और सिनेमा पर बात करते हुए गुलज़ार ने एक बार कहा था कि सिनेमा की तुलना में साहित्य का प्रभाव ज़्यादा गहरा और स्थाई होता है, एक फ़िल्म के ज़रिए हम पर जो प्रभाव पड़ता है वो कई कलाओं का होता है। जबकि साहित्य हमारी कल्पना को जगा कर सीधा असर करता है।

MALE: वैसे 'टाइटेनिक' जैसी कुछ फ़िल्में फ़िल्म होने के बावजूद अपने प्रभाव में कविता जैसी होती हैं। अच्छे फ़िल्मकारों ने सिनेमा को साहित्य के क़रीब लाकर उसमें साहित्य का प्रभाव पैदा करने की कोशिश भी की है। इसके लिए उन्होंने जीवन के अछूते प्रसंगों को बहुत गहराई से छूने की कोशिश

© Cambridge University Press & Assessment 2024

की है। समकालीन हिंदी कथा साहित्य और हिंदी सिनेमा पर इस दृष्टि से देखने पर कई बार सिनेमा आगे निकलता दिखाई देता है। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 4 की इस बातचीत को अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।**
This is the end of the examination.

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (Cambridge University Press & Assessment) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge Assessment International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge International Education is the name of our awarding body and a part of Cambridge University Press & Assessment which is a department of the University of Cambridge.

© Cambridge University Press & Assessment 2024